

प्रेषक,

डा० राकेश कुमार
सचिव,
उत्तराखण्ड शासन।

सेवा में

प्राचार्य,
वीर चन्द्र सिंह गढ़वाली राजकीय आयुर्विज्ञान शोध संस्थान
पीडी गढ़वाल।

धित्तिता अनुभाग-1

देहरादून दिनांक ८.1. बिसम्बर, 2008

विषय: वीर चन्द्र गढ़वाली राजकीय आयुर्विज्ञान शोध संस्थान श्रीनगर के प्रथम बरत के निर्माण कार्य हेतु अवरोध धनराशि की स्वीकृति के सम्बन्ध में।

महोदय,

उपरोक्त विषयक कृपया अपने पत्र संख्या-पैठक/आर०एन०एन०/2008/505 दिनांक 20 अगस्त 2008 का स्वार्थ ग्रहण करने का कष्ट करें। इस सम्बन्ध में मुझे यह कहने का निदेश हुआ है कि श्रीनगर मेडिकल कॉलेज की स्थापना हेतु निर्माण कार्य की स्वीकृति विषयक शासनादेश संख्या-164/XXVIII(1)/2007-19/2006 दिनांक 29 अक्टूबर 2007 द्वारा स्वीकृत कार्य को पूर्ण करने हेतु सदस्थान में स्वीकृत लागत के सापेक्ष ज्ञापन हेतु रुपये 50000 लाख (रुपये पचास करोड़ मात्र) की धनराशि निम्नलिखित प्रतिबंधों के अधीन आपके निर्वहन पर रखने की भी राज्यपाल महोदय निम्नलिखित शर्तानुसार सहमति स्वीकृति प्रदान करते हैं:-

1. ज्ञापन वित्त समिति की दिनांक 26.06.2007 का आयोजित बैठक के कार्यवृत्त में उल्लिखित शर्तों के अनुसार निर्माण कार्य को लिए दिए गये दिशा-निर्देशों तथा पूर्व निर्गत शासनादेशों की बातों का कड़ाई से अनुपालन किया जायेगा। स्वीकृत धनराशि ज्ञापन वित्त समिति द्वारा स्वीकृत कार्य पर ही तथा स्वीकृत लागत की सीमा तक ही व्यय की जायेगी।
2. कार्य करता है सन्ध स्वीकृत विनिर्दिष्टों के अनुरूप कार्य करता है तथा कार्य की गुणवत्ता पर विशेष धन दिया जाय। कार्य की गुणवत्ता का पूर्ण उत्तरदायित्व निर्माण एजेंसी का होगा। किसी भी परिस्थिति में निर्माण एजेंसी द्वारा प्रभावित कार्य को subcontracting नहीं की जायेगी।
3. उक्त धनराशि में से 97.5 प्रतिशत ही आहरित कर परियोजना प्रत्यक्ष 3000 राजकीय निर्माण निर्माण लिए इकाई-2 श्रीनगर पीडी गढ़वाल को उपलब्ध करायी जायेगी। शेष 2.5 प्रतिशत धनराशि को Defect Liability के रूप में रखा जायेगा। यह 2.5 प्रतिशत धनराशि सोलिसिटिंग द्वारा निर्मित भवनों की जीव कर Satisfactory Certificate दिने जाने के उपरान्त निर्गत की जायेगी। स्वीकृत धनराशि का उपयोग प्रारंभिक दशा में इसी वित्तीय वर्ष के भीतर सुनिश्चित किया जायेगा। निर्माण एजेंसी कार्य प्रारम्भ करने से पूर्व यह सुनिश्चित कर ले कि कार्य स्वीकृत लागत में ही पूर्ण कराया जायेगा तथा किसी भी दशा में लागत पुनर्निश्चित नहीं की जायेगी।
4. शासन को यह प्रमाण पत्र उपलब्ध कराया जायेगा कि उक्त कार्य की स्वीकृति पूर्व में किसी भी योजना में नहीं हुई है।
5. उक्त कार्य हेतु धर्म चर्ची से गुणवत्ता/प्रगति की जीव सीबी०अन०अई०क०की या अन्य किसी प्राधिकृत संस्था से कराया जाय। इस सम्बन्ध में होने वाला व्यय सेंट्रल चार्ज से वहन किया जायेगा तथा इस हेतु अलग से कोई धनराशि स्वीकृत नहीं की जायेगी। कार्य करने से पूर्व विस्तृत आगमन/मन्त्रिण मण्डल कर नियमानुसार सक्षम प्राधिकारी से प्राविधिक स्वीकृति प्राप्त करनी होगी किन्तु प्राविधिक स्वीकृति के किसी भी दशा में कार्य प्रारम्भ न किया जाय।
6. 3000 राजकीय निर्माण लिए द्वारा आर्किटेक्ट द्वारा भवन को डिजाइन कराया जायेगा। आर्किटेक्ट के समय में निर्माण एजेंसी द्वारा प्राचार्य के माध्यम से शासन से पूर्वानुमोदन प्राप्त किया जायेगा।
7. स्वीकृत धनराशि के आहरण से सम्बन्धित बाक्यर रकमा एवं दिनांक की सूचना तत्काल उपलब्ध करायी जायेगी तथा धनराशि का व्यय वित्तीय हस्त प्रतिका में उल्लिखित प्राविधिकों में बजट में अनुमति तथा शासन द्वारा समय समय पर निर्गत आदेशों के अनुरार किया जाना सुनिश्चित किया जायेगा।

8. आगणन में उल्लिखित दरों का विस्तरेण विभाग के सक्षम स्तर द्वारा स्वीकृत / अनुमोदित दरों को तथा जो दरें सिडयूल आफ रेट में स्वीकृत नहीं हैं अथवा बाजार भाव से तो नहीं हो, की स्वीकृति नियमानुसार सक्षम अधिकारी का अनुमोदन आवश्यक होगा।
9. कार्य पर उतना ही व्यय किया जायेगा जितना कि स्वीकृत नामर्स हैं, स्वीकृत नामर्स से अधिक व्यय कदापि न किया जाये।
10. मुख्य सचिव, उत्तराखण्ड शासन के शासनादेश संख्या-2047/XIV-219(2006) दिनांक 30.08.2006 द्वारा निर्गत आदेशों का कार्य करता समय या आगणन गणित करते समय कड़ाई से पालन किया जाये।
11. स्वीकृत की जा रही धनराशि उल्लिखित कार्य हेतु ही व्यय की जाय एवं अन्यत्र/अन्य कार्य हेतु व्यय कदापि न किया जाय। निर्माण सामग्री को प्रयोग में लाने से पूर्व किसी प्रयोगशाला से परीक्षण कृत की जाए, उपयुक्त पायी जाने वाली सामग्री को प्रयोग में लायी जाए।
12. कार्य कराने से पूर्व सक्षम औपचारिकतः तकनीकी दृष्टि को मध्य नजर रखते हुए सक्षम अधिकारी द्वारा प्रस्तावित दरों / विशिष्टियों के अनुरूप ही कार्य सम्पादित करता समय पालन करना सुनिश्चित करे।
13. स्वीकृत धनराशि की वित्तीय एवं भौतिक प्रगति आठवा दशा में माह 07 तकरीब तक निर्धारित प्रारूप पर शासन को उपलब्ध करायी जायेगी। यह भी स्पष्ट किया जायेगा कि इस धनराशि से निर्माण का कौन सा अंश पूर्णतः निर्मात किया गया है।
14. कार्य कराने से पूर्व उन्वाधिकारियों एवं मृगभेदता से कार्य स्थल का भली-भाँति निरीक्षण अवश्य करा लिया जाये तथा निरीक्षण के परामर्श दिये गये निर्देशों के अनुरूप ही कार्य कराया जाये।
15. आगणन में फोर्टेज आदि की दूरिया तथा बुलान की दरों को विस्तृत आगणन गणित करते समय अतीव्रण अभियन्ता स्थल आवश्यकानुसार सभी मदों को पुनः परीक्षण कर प्रमाण-पत्र उपलब्ध करायेगा कि बुलान आदि तथा एक मुश्त प्राविधानों को शात प्रतीतिता जटिल को उपरान्त भुगतान किया गया है तथा तसवी पुर्वि हेतु शासन को भी अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत करेगा।
16. योजना के कार्य का शीघ्र प्राथमिकता के अन्तर्गत पर पूर्ण किया जाए, ताकि लागत पुनरीक्षित करने की आवश्यकता न पड़े।
17. धनराशि का आहरण एवं व्यय आवश्यकतानुसार अथवा मित्रव्ययता को ध्यान में रखकर किया जाय।
18. उक्त व्यय वित्तीय वर्ष 2008-09 के आद्य-व्ययक में अनुदान संख्या-12 के तत्कालीन 4210-चिकित्सा तथा लोक स्वास्थ्य पर पुर्जीगत परियोजना-आयोजनागत-03-चिकित्सा शिक्षा प्रशिक्षण तथा अनुसन्धान -108-एलोपैथिक-03-भीमनगर में मेडिकल कॉलेज की स्थापना-24-वृद्धा निर्माण कार्य के अन्तर्गत प्राविधानित धनराशि के नाम डाला जाय।
19. यह आदेश वित्त विभाग के अस्तसवी संख्या-234(17)/वित्त अनुभाग-3/2007 दिनांक 08 दिसम्बर 2008 में प्राप्त उनकी सहमति से जारी किया जा रहा है।

भवदीय

(डा० राकेश कुमार)
सचिव।

संख्या एवं दिनांक तदैव।

प्रतिलिपि निम्नलिखित को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित:-

1. निजी सचिव, मा० मुख्यमंत्री।
2. महानिदेशक चिकित्सा स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण, उत्तराखण्ड, देहरादून।
3. महालेखाकार, उत्तराखण्ड, माऊरी, देहरादून।
4. सहायक, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण, उत्तराखण्ड, देहरादून।
5. निदेशक, कोषागार, उत्तराखण्ड, देहरादून।
6. जिलाधिकारी, पी०डी।

7. धरिष्ठ कोषाधिकारी, देहरादून।
8. कोषाधिकारी, पौड़ी।
9. मुख्य चिकित्साधिकारी, पौड़ी।
10. मुख्य चिकित्साधीक्षक, श्रीनगर बैस चिकित्सालय, श्रीनगर।
11. परियोजन प्रबन्धक, 30प्र0 राजकीय निर्माण निगम, लि0 इकाई-2 श्रीनगर पौड़ी गढ़वाल।
12. बजट राजकोषीय नियोजन एवं सहायन निदेशालय, सचिवालय, देहरादून।
13. वित्त अनुभाग-3 / नियोजन विभाग / एन.आई.सी।
14. गार्ड फाइल।

आज्ञा से
राम
 (भाषावती दफतरियामत)
 जय रायिध।